हीराबाई का यथार्थ स्वरूप

धर्मेन्द्र कुमार

हीराबाई अनुपम सौंदर्य की मल्लिका थी। उसके सौंदर्य की छटा निराली थी। इस निराले सौंदर्य में कई रंग मिले थे–जिसमें उसका रूप, उसकी हँसी, उसके दाँत, उसकी मुस्कुराहट, उसका खोया–खोया चेहरा सभी शामिल है। हीराबाई के सौंदर्य का सर्वप्रथम दीदार हिरामन को रात्रि के समय होता है–जब उसकी बैलगाड़ी में वह बैठी है। जैसे ही हीराबाई करवट लेती है वैसे ही उसके चेहरे पर चाँदनी फैल जाती है। जिस कारण उसका सौंदर्य बहुगुणित हो जाता है। उसके इस सौंदर्य का दीदार कर हिरामन चीखते–चीखते कहता है–अरे बाप ई तो परी है। हिरामन को हीराबाई के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में सौंदर्य का दीदार होता है। जब हीरबाई बोलती है तब उसे उसकी आवाज, मन में मिश्री धोल देने वाली लगती है–अनदेखी औरत की आवाज ने हिरामन को अचरज में डाल दिया। बच्चों की बोली जैसी महीन, फेनूगिलासी बोली। हिरामन हीराबाई के दाँत के सौंदर्य की तुलना बैलों के माला में पिरोये गये नन्ही–नन्ही चित्ती कौडियों से करता है। उसे लगता है कि हीराबाई के दाँत इन्हीं छोटी–छोटी नन्हीं–नन्हीं कौडियों के पाँत है। उसे हीराबाई की एक– एक अदा में सौंदर्य दिखाई पड़ता है। उसका बोलना–हँसना, खोया–खोया रहना सभी में अनुपम सौंदर्य की कशिश दिखाई पड़ती है। हीराबाई की मुस्कुराहट के संदर्भ में साहित्यकार आलोचक भारत यायावर कहते है– उसकी सवारी मुस्कुराती है। ...मुस्कुराहट में खुशबू है। हीरबाई की आँखें गुजुर–गुजुर उसको हेर रही है। हिरामन के मन में कोई अजानी रागिनी बज उठी। सारी देह सिरसिरा रही है। हिरामन का मन पल–पल बदल रहा है। मन में सतरंगा छाता धीरे–धीरे खिल रहा है। हीराबाई के रूप सौंदर्य का वर्णन आलोचक मधुरेश बिल्कुल नये अंदाज में करते हुई कहते हैं–हीराबाई के रूप–रस और गंध को जिस मोहक अंदाज में कहानी में बाँधा गया है, वस्तुतः वे ही तत्व रीतिकालीन उपमानों को नये सिरे से पुनर्जीवित करने का प्रयास करते हैं। हीराबाई के सौंदर्य वर्णन में कनुप्रिया से आश्चर्यजनक समानता है।